International Journal of Professional Development
Vol.10,No.2,July-Dec.2021 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor: 3.115

जनसंख्या और आर्थिक विकास: एक अध्ययन

डॉ0 रीना देवी
महिला महाविद्यालय, झोझू–कलाँ, असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल
ईमेल–drreenammjk@gmail.com

भारत समेत कई अन्य विकासशील देश जनसंख्या विस्फोट की स्थिति से गुजर रहे हैं। यह तर्क दिया जा रहा है कि इस स्थिति के पैदा होने का यह कारण है कि इन देशों में आर्थिक विकास की गति, जनसंख्या में वृद्धि के सापेक्ष, बहुत कम रही है। इस तर्क का आधार यह है कि जनसंख्या में तेज वृद्धि होने पर गरीबी पैदा होती है जो विकास में अवरोधक है, इसलिए यदि ये देश गरीबी को दूर करना चाहते हैं तथा आर्थिक विकास की गति को तेज करना चाहते हैं तो इन्हें अपनी जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण लगाना होगा। इस विषय में हम जनसंख्या में वृद्धि के साथ आर्थिक विकास कैसा होता है, पर विचार करेगे।

- जनसंख्या विस्फोट का अर्थ
- भारत में जनसंख्याः जनांकिकी प्रवृतियाँ
- भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण
- जनसंख्या और आर्थिक विकास

जनसंख्या विस्फोट का अर्थ

पृथ्वी पर मानव का विकास आज से लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व पुरापाषण काल में हो चुका था। उस समय विश्व में मनुष्यों की संख्या संभवतः एक हजार से भी कम रही होगी। ईसा के प्रारम्भिक काल तक इसके लगभग 13 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया है। सन् 1650 तक जनसंख्या बढकर लगभग 55 करोड़ हो गयी। सन् 1950 में विश्व की कुल जनसंख्या 251 करोड़ थी, परन्तु पिछले 50 वर्षों में (1950–2000 तक) यह पुनः लगभग ढाई गुना हो गयी। इससे स्पष्ट है कि जनसंख्या की उल्लेखनीय वृद्धि आज से लगभग 400 वर्ष पहले आरंभ हुई और इसकी वृद्धि दर में निरन्तर वृद्धि होती गयी। इनके विकासशील देशों जैसे– चीन, भारत आदि में यह वृद्धि इतनी तीव्र रही है कि वे जनसंख्या विस्फोट की स्थिति में आ गये हैं।

प्रसिद्ध परंपरावादी अर्थशास्त्री माल्यस के अनुयायियों के अनुसार अल्प–विकसित देशों में जनसंख्या की समस्या मनुष्य के पुनरूत्पादक आचरण से जुड़ी हुई है लेकिन जनांकिकीय परिवर्तन सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक देश की जनसंख्या को तीन अवस्थाओं से गुजरना होता है।

पहली अवस्था

पहली अवस्था में जन्म और मृत्यु दोनों ही की दरें ऊँची होती है, इसलिए जनसंख्या स्थिर रहती है। अप विकसित कृषि प्रधान देशों में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय थोड़ी है और जन–साधारण का जीवन स्तर नीचा है। भोजन असंतुलित और अपर्याप्त, आवास की व्यवस्था अस्वास्थ्यकर, शिक्षा, अंधविश्वास और चिकित्सा की सुविधाएं न होने के कारण मृत्यु दर ऊँची होती है। अल्पविकसित देशों में सामाजिक और आर्थिक कारणों से जन्म दर ऊँची होती है।

दूसरी अवस्था

दूसरी अवस्था में मृत्यु दर नीचे आने लगती है, लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है। इस अवस्था में जनसंख्या तेजी से बढ़ती है। जन्म दर में कोई परिवर्तन नहीं होता परन्तु चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि होने और रोगों पर काबू पा लेने की वजह से मृत्यु दर में कमी होने लगती है।

तीसरी अवस्था

तीसरी अवस्था में जन्म और मृत्यु दरें नीची हो जाती है और जनसंख्या की वृद्धि दर की नीची रहती है। औद्योगिकरण व शहरीकरण बढ़ने से लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ती है और परिवार नियोजन के बारे में जानकारी बढ़ती है तथा जन्म दर गिरने लगती है और यह स्थिति आ जाने पर जनसंख्या

विस्फोट की अवस्था समाप्त हो जाती है तथा जनसंख्या की समस्या का समाधान हो जाता ळें

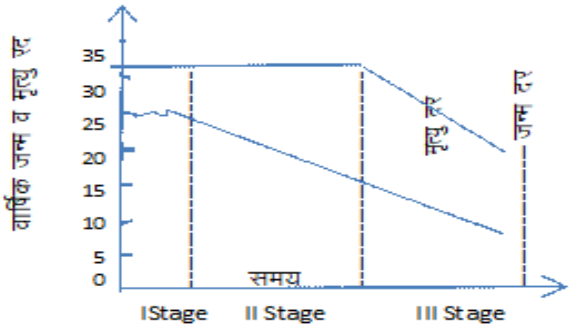

"जनांकिकीय परिवर्तन की तीन अवस्थाएँ"

भारत में जनसंख्याः जनांकिकी प्रवृतियाँः

जनसंख्या आकारः जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का स्थान चीन के बाद दूसरा है। भारत का भू–क्षेत्र संसार के भू–क्षेत्र का लगभग 2.4 प्रतिशत है लेकिन यहाँ रहने वाली जनसंख्या समस्त विश्व की जनसख्या की 17.5 प्रतिशत है। वस्तुतः 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121. 02 करोड़ है, जो अमेरिका, इंडोनेशिया, ब्रजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा जापान की कुल मिला कर जनसंख्या 121.43 करोड़ के आस–पास है। ये तथ्य इस बात को स्पष्ट करते हैं कि भारत में जनसंख्या का अत्यधिक दबाव है।

भारत की जनसंख्या में वृद्धि

जनसंख्या का वर्ष	जनसंख्या करोड़ों में	दशकीय वृद्धि दर	औसत वार्षिक वृद्धि दर	जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0)
1901	23.83	.....	0.18	77
1951	36.11	13.31	1.25	117
1961	43.92	21.64	1.96	142
1971	54.82	24.80	2.20	177
1981	68.33	24.66	2.22	216
1991	84.64	23.87	1.97	267
2001	102.87	21.54	1.97	325
2011	121.02	17.64	1.64	382

Source"- Govt of India census of India, Provisional population tables: Report 1 of 2011 (India series 1, 2011) statement 2, P.41 and statement 31, p 138

जन्म व मृत्यु दरें

जनसंख्या में वृद्धि की दर खासकर जन्म दर और मृत्यु दर पर निर्भर होती है। 1950 से 2010–11 के बीच जहाँ जन्म दर में 44.6 प्रतिशत कमी हुई है, वहाँ मृत्यु दर एक तिहाई से भी कम रह गई है। फलतः देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा हो गई है। 1901 से 1921 तक बीस वर्षों में जनसंख्या लगभग स्थिर रही क्योंकि जन्म व मृत्यु की दरें लगभग बराबर थी लेकिन जैसे ही स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की दशाओं में सुधार हुआ और मलेरिया, प्लेग, इन्फ्लुएंजा, हैजा, डायरिया आदि रोगों के असर में कमी हुई तो मृत्यु दर में स्थायी रूप में कमी हो गई।

State of world's Population 2011 की रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक भारत की जनसंख्या 146 करोड़ तक पहँच जाएगी जबकि चीन की जनसंख्या 139 करोड़ होगी। फलतः जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व का सबसे बड़ा देश बन जाएगा।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण

जनसंख्या वृद्धि के तीन कारण हो सकते हैंः–

1. नीची मृत्यु दर
2. ऊँची जन्म दर
3. देशांतर गमन

भारत में देशांतर गमन के कारण अधिक वृद्धि नहीं हुई है। इसलिए इस देश में जनसंख्या वृद्धि के दो ही कारण हैंः

- मृत्यु दर में भारी कमी
- जन्म दर का ऊँचा रहना

मृत्यु दर में गिरावट के कारण

अकालों में कमी: ब्रिटिश काल में मृत्यु दर ऊँची रहने का एक मुख्य कारण था– बार–बार अकालों का पड़ना। परन्तु आजादी के बाद अकाल रोकने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं। सूखा और फसल खराब होने की स्थिति में राहत कार्य जिस तेजी से किया जाता है, उससे ज्यादा लागों की जाने नहीं जाती। तात्पर्य यह है कि अकालों पर सरकार ने काबू पा लिया है। इससे मृत्यु दर नीची हुई है।

महामारियों पर नियंत्रण: स्वतन्त्रता से पहले देश में प्लेग, हैजा और चेचक का भारी प्रकोप रहता था और इन महामारियों से मरने वालों की संख्या काफी होती थी। हैजे से 1925 में लगभग 5 प्रतिशत जनसंख्या की मृत्यु हो गई थी। प्लेग व चेचक तो अब बिल्कुल खत्म हो गए हैं। अतः पिछले छः दशकों में चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि होने के कारण महामारियों पर नियंत्रण रखा गया है। अतः यह लगता है कि महामारियों की रोकथाम से मृत्यु दर नीची हुई है।

अन्य कारण: कुछ अन्य कारण भी हैं जिनके कारण भी मृत्यु दर में गिरावट हुई है, जैसेः–

- शिक्षा का प्रसार
- चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि
- स्वच्छ जलापूर्ति
- निःशुल्क टीकाकरण

ऊँची जन्म दर के कारण

गरीबी की व्यापकता:' अल्पविकसित देशों में व्यापत गरीबी बढ़ती जन्म दर का प्रमुख कारण है। महमूद ममदानी ने लिखा भी है "लोग इसलिए गरीब नहीं हैं कि उनके परिवार बड़े हैं। इसके विपरीत उनके परिवार इसलिए बड़े होते हैं वे गरीब हैं"।

संतति निरोधक उपायों का सीमित उपयोग: भारत में अभी संतति निरोधक उपायों का प्रयोग सामान्यतः नगरों की शिक्षित जनसंख्या तक ही सीमित है। यद्यपि गाँवों में भी राज्य द्वारा परिवार नियोजन संबंधी प्रचार कार्य चल रहा है तथा संतति निरोध के लिए तरह–तरह की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं, फिर भी वहाँ अभी अधिक सफलता नहीं मिल सकी है।

अन्य कारण:

- कृषि की व्यापकता
- शहरीकरण का नीचा स्तर
- गरीबी की व्यापकता
- विवाह की व्यापकता
- धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास
- संयुक्त परिवार प्रथा
- शिक्षा का अभाव

जनसंख्या और आर्थिक विकास:

कुछ विद्वान जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक विकास के लिए एक अभिशाप मानते हैं। इनका तर्क है कि अर्द्ध विकसित देशों में राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ने पर भी निर्धनता का साम्राज्य होता है। इसका प्रमुख कारण केवल जनसंख्या में अवांछित वृद्धि ही है। इस मत के समर्थकों में 'माल्थस' का नाम अग्रणी है। माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को एक भयंकर राक्षस की संज्ञा दी थी। उन्होंने कहा था कि यदि मानव ने आत्मसंयम के नियमों के पालन से जनसंख्या वृद्धि पर प्रतिबंध नहीं लगाया , तब प्रकृति स्वयं इसे नियंत्रित करने को बाध्य हो जाएगी। जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ता हैः–

जनसंख्या एवं खाद्यान्न की पूर्ति: जनसंख्या का खाद्यान्न की पूर्ति से प्रत्यक्ष संबंध है। अर्द्ध विकसित राष्ट्रों में जहाँ जनसंख्या तेजी से बढ़ती है, वहाँ खाद्यान्नों का अभाव पाया जाता है जिससे जनसंख्या को पेट भर भोजन नहीं मिलता और कार्यक्षमता में कमी हो जाती है। परिणामस्वरूप आय में कमी आ जाती है। कुल उत्पादन में कमी हो जाती है और आर्थिक विकास मंदा पड़ जाता है।

जनसंख्या एवं पूंजी निर्माण: अर्धविकसित देशों में पूँजीगत साधनों का अभाव पाया जाता है जबकि श्रम अधिक मात्रा में पाया जाता है। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए पूँजी की आवश्यकता पड़ती है परन्तु जनसंख्या की अधिकता के कारण उपभोग अधिक व विनियम कम हो पाता है जिससे पूँजी का निर्माण नहीं हो पाता।

जनसंख्या एवं तकनीकी: देश की जनसंख्या पर तकनीक स्तर का काफी प्रभाव पड़ता है यदि देश की जनसंख्या शिक्षित और महत्वाकांक्षी है तो वह नवीन तकनीकों को सरलता से ढूंढ सकती है। इसके विपरीत अशिक्षित एवं उदासीन जनसंख्या

www.ijpd.co.in

पिछड़ी हुई तकनीक को ही अपनाए रहती है। अतः यही कारण है कि गाँवों की अपेक्षा शहरों में उन्नत तकनीकों को प्रथम अपनाया जाता है।

जनसंख्या एवं उत्पादनः किसी भी राष्ट्र में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का अनुकूलतम उपयोग जनसंख्या के आदर्श अनुपात पर निर्भर करता है यदि देश में उत्पादन वृद्धि के साथ–साथ जनसंख्या की मात्रा में भी तीव्र वृद्धि हो जाती है तो उत्पादन में वृद्धि होने का प्रभाव शून्य रहेगा। जिससे देश के आर्थिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अन्य प्रभावः

- जनसंख्या वृद्धि होने से बेरोजगारी बढ़ती है।
- जनसंख्या वृद्धि होने से आश्रित जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है व अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।
- जनसंख्या वृद्धि होने से सन्तुलित विकास नहीं हो पाता।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जनसंख्या में वृद्धि होने के साथ–साथ देश की अर्थव्यवस्था का विकास मंद पड़ जाता है, क्योंकि जनसंख्या बढ़ती है तो अधिक खाद्यान्नों की आवश्यकता पड़ती है, जिससे विनियम कम हो पाता है व आर्थिक विकास में वृद्धि नहीं हो पाती।

References

1. पुरी, बी.के. और मिश्रा, एस0के0भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस, मुम्बई (26th Revised edition)
2. मौर्य, एस.डी. (2013). जनसंख्या भूगोल शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
3. सक्सेना, ए .क. आर्थिक वृद्धि विकास एवं नियोजन, साधना प्रकाशन, मेरठ

www.ijpd.co.in